B.Ed

Ist year

Sanskrit

सत्र - 2017-18

संस्कृत पाठ्य पुस्तक निर्माण

सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए 'पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति' का गठन किया जाता है। वह समिति पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करती है। संस्कृत पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

1. पाठ्यपुस्तक का आकार मध्यम होना चाहिए।
2. पाठ्यक्रमानुसार श्लोक, कहानी व शिक्षाप्रद पाठ होने चाहिएँ।
3. सभी पाठों में छोटे-छोटे चार्ट या (तस्वीर) चित्र होने चाहिए व चित्र रंगीन हो।
4. सभी पाठ रोचक होने चाहिएँ।
5. मुखपृष्ट आकर्षक होना चाहिए।

5. पाठ अधिक विस्तृत न हों

6. पाठ्य वस्तु सामाजिक तथा वास्तविक जीवन से सम्बन्धित हो

7. संस्कृत पाठ्य पुस्तक की शैली सरल, तर्कपूर्ण, एवं भाव प्रकाशन की क्षमता से युक्त हो।

8. अभ्यास में लिखित प्रश्न सभी प्रकार के हों।

9. प्रारम्भिक स्तर पर पाठ्य पुस्तक का आकार 6" x 4" का और माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर 7.5" x 7.5" और 8.5" x 5.5" का होना चाहिए।

10 अच्छा कागज, अच्छी छपाई, उचित मूल्य, सिलाई युक्त तथा साज-सज्जा से युक्त होनी चाहिए।

शब्द रूप

'हरि' पुल्लिंग इकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरि	हरी	
द्वितीया	हरिम्	हरी	
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम	
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम	
षष्ठी	हरेः	हर्योः	
सप्तमी	हरौ	हर्योः	
सम्बोधन	हे हरे !	हे हरी !	

हरि शब्द की भांति अन्य ह्रस्व इकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप चलेंगे। जैसे-मुनि, ऋषि, कपि, विधि, जलधि, रवि, अग्नि, मुनि, पयोधि आदि।

शब्द रूप

राम 'पुल्लिङ्ग' अकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितिया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	"	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात् रामाद्	"	"
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम !	हे रामौ !	हे रामाः !

राम शब्द की तरह सभी पुल्लिंग अकारान्त शब्दों के रूप चलेंगे। जैसे- बालक, कृष्ण, गज, ईश्वर, गणेश, पुत्र, वृक्ष, चन्द्र, शिव, गोपाल, सुर, राक्षस, मनुष्य, जनक आदि।

शब्द रूप

'लता' अजन्त आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लता:
द्वितीया	लताम्	लते	लता:
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लताया:	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लताया:	लतयो:	लताणाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयो:	लतासु
सम्बोधन	हे लते!	हे लते!	हे लता: !

लता शब्द की तरह अन्य आकारान्त स्त्रलिंग शब्दों के रूप भी चलेंगे। जैसे- रमा, माला, दया, शोभा, वाटिका, शिवा, संन्ध्या, आज्ञा, संख्या आदि।

शब्द रूप

नदी 'ईकारान्त स्त्रलिङ्ग'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि
चतुर्थी	नद्यैः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम
सप्तमी	नद्याम	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

ईकारान्त स्त्रीलिंग 'नदी' की तरह अन्य रूप भी चलते हैं। जैसे – दानिनी, मानिनी, देवी, कर्त्री, रमणी, पत्नी, बुद्धिमती, सती आदि।

धातु रूप

पढ़ना पठ् = लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

पठ् = लङ् लकार

प्र० पु०	अपठत्	अठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लिख् लट् लकार
(लिखना)

प्र० पु०	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
म० पु०	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उ० पु०	लिखामि	लिखाव	लिखामः

लिख् लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

भू लट् लकार

प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथः	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवावः	भवामः

भू लङ् लकार

प्र० पु०	अभवत	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम	अभवत
उ० पु०	अभवम	अभवाव	अभवाम

धातु रूप

अस् (होना) लट् लकार

प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

अस् (होना) लङ् लकार

प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

कृ (करना) लट् लकार

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोसि	कुरुथः	कुरुत
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

10

कृ (लङ् लकार) करना

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकुर्वम्	अकुर्व	अकुर्म

व्याकरण अनुवाद शिक्षण विधि

मनुष्यों में एक से अधिक भाषाएँ सीखने की तत्परता रही है। अतः मातृ भाषा के अतिरिक्त भाषा सीखने के लिए उस भाषा के व्याकरण को सीखें। तत्पश्चात् उस भाषा के छोटे-छोटे वाक्यों से भाषा सीखने का अभ्यास करें। क्योंकि व्याकरण से ही भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है। जैसे- लड़का जाती है। यह अशुद्ध रूप है।

पाठ्य पुस्तक विधि

पाठ्य पुस्तक विधि में संस्कृत भाषा वाचन पर अत्यधिक बल दिया गया है। इसकी सामग्री बालकों के भौतिक तथा सामाजिक वातावरण से ली गई है। इसमें सरल तथा छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा वाचन अभ्यास किया जाता है। कक्षा के स्तर के अनुसार पाठ्य पुस्तक तैयार की जाती हैं।

व्याकरण अनुवाद शिक्षण विधि

अनुवाद 'अनु + वाद' इन दो शब्दो से मिलकर बना है, जिसका अर्थ हुआ 'पीछे कहना'। अर्थात् एक भाषा में कही गई या लिखी गई बात या वाक्य को दूसरी भाषा में कहना या लिखना।

अनुवाद का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है। क्योंकि एक भाषा की अच्छी तथा महत्वपूर्ण सामग्री को अनुवाद द्वारा दूसरी भाषा में कहा या लिखा जाता है, अतः अनुवाद द्वारा ही हम विदेशों की शिक्षा की तुलना हमारी शिक्षा से करके शिक्षा को सुधारा जाता है अर्थात् पाठ्यक्रम में, वाञ्छित शिक्षा को डाल दिया जाता है।

पाठशाला विधि

पाठशाला शब्द 'पाठ + शाला से मिलकर बना है। पाठ् का अर्थ है पढ़ाना। यह पठ् धातु से 'घञ्' प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। शाला का अर्थ है- 'घर' । अतः दोनों को मिलाकर पाठशाल शब्द बना, जिसका अर्थ है- पढ़ने या पढ़ाने का घर। यह विद्यालय मदरसा, स्कूल, गुरुकुल का पर्यायवाची शब्द है।

इस विधि में बालक को नियमित रूप से पाठशाला में जाना होता है और निश्चित समय में निश्चित पाठ्यक्रम का अभ्यास कराया जाता है। अतः शिक्षण में पाठशाला विधी का बहुत महत्व है।

—

प्रत्यक्ष विधि

शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्रत्यक्ष विधि का बहुत अधिक महत्व है। प्रत्यक्ष का अर्थ है- सामने (आँखों के सामने)। अतः बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से जिस वस्तु का ज्ञान कराया जाएगा वह ज्ञान स्थायी होगा।

जैसे → शैक्षिक यात्रा, कक्षा में जिन वस्तुओं को लाया नहीं जा सकता उसके लिए हम चार्ट या मॉडल का सहारा लेते हैं जो अनुचित है। अतः बालक को दिखाई गई वस्तु के ज्ञान को हम प्रत्यक्ष ज्ञान कहेंगे। जैसे गाय, भैंस, कुर्सी, मेज, पंखा, बर्तन आदि।

संस्कृत अध्यापक तथा दृश्य श्रव्य साधन प्रयोग →

संस्कृत अध्यापक को निम्न गुणों से युक्त होना चाहिए –

1. स्वभाव से सरल, मधुरभाषी, शुद्ध तथा उच्च चरित्रवान् होना चाहिए।
2. अपने भले के लिए दूसरों का भला करने वाला हो
3. राग-द्वेष की भावना से परे हो
4. मनसा, वाचा तथा कर्मणा से समान होना चाहिए।
5 कथनी व करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए।
6 सादा जीवन - उच्च विचार से युक्त हो।

7 – समय का पाबन्ध होना चाहिए।

8- कठोर परिश्रमी होना चाहिए।